पंजीयन क्रं. 06/09/01/04737/04

विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 24, वर्ष 4, अंक 39 माह - जून 2022, मूल्य - निःशुल्क

आपके विकास को समर्पित

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

सतत् विकास पर एक दिवसीय परिचर्चा आयोजित

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक व अध्यक्ष
मो. 9009780020

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
मो. 9893800638

सौरभ रांधेलिया
उपाध्यक्ष
मो. 8462880439

आकांक्षा मलैया
सचिव
मो. 9165422888

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष, मो. 9826023692

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक, मो. 9009780042

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी, मो. 9302556222

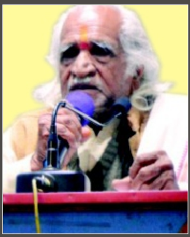

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

राजेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयॉश जैन
मार्गदर्शक

गुलझारीलाल जैन
मार्गदर्शक

प्रदीप रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

विचार समिति का मासिक प्रकाशन

विचार मासिक पत्रिका

वर्ष - 4, अंक - 39, जून - 2022

संपादक

आकांक्षा मलैया

प्रबंधक व प्रकाशक

विचार समिति

स्वामित्व

विचार समिति

258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड,
आदिनाथ कार्स प्रा. लिमि.
के पीछे, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

Email: sanstha.vichar@gmail.com
Phone: 9575737475
07582-224488

मुद्रण

तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट
पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली,
रामपुरा वार्ड, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

इस अंक में

1. गर्मी में लू से बचने के कुछ आसान उपाय 4
2. गांव की लड़कियों के टूटते सपने 5
3. सोशल मीडिया और हम 7
4. कपिल मलैया नि:स्वार्थ भाव से समाज के उत्थान में तन-मन-धन से सेवा कर कार्य रहे हैं 10
5. गोबर के दियों से भावी पीढ़ी पश्चिमीकरण के प्रति सचेत होगी 13
6. विचार समिति से जुड़े खुशहाल परिवारों की सफलता की कहानी 14
7. प्रकृति प्रेमियों के लिए विचार समिति ने मंगलगिरी पहाड़ी पर बनाया प्रकृति पथ.......... 18
8. सस्टेनेबल डेवलपमेंट का उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधन उपलब्ध कराना 19
9. लीफी चेंज मेकर्स फेलोशिप अभियान का शुभारंभ.......... 21
10. छात्रों के कैरियर की खोज और विकास के लिए समिति ने शुरू की समर इंटर्नशिप...... 22

मीडिया कवरेज :- 23

गर्मी में लू से बचने के कुछ आसान उपाय

डॉ. पीयूष जैन
MBBS, MD
(Medicine)
डॉ. अंजली जैन
BDS

इस समय आधा भारत गर्मी की समस्याओं से जूझ रहा है। कड़ी धूप में काम करने वाले गरीब तबके के लोग, खिलाड़ियों, बच्चे, बूढ़े और बीमार लोगों को लू लगने का डर ज्यादा रहता है। लू लगने के बाद इसका इलाज किया जाये, इससे बेहतर है कि हम लू लगने से पहले ही अपना बचाव कर लें। लिहाजा इन जरूरी बातों का ध्यान रखें। सबसे पहले बात करते हैं हीट स्ट्रोक यानि लू लगना।

क्या है हीट स्ट्रोक?

- अधिक गर्म और शुष्क हवाओं को लू कहा जाता है। इनका तापमान सामान्य से अधिक होता है।
- लू मार्च से जून के बीच चलती है लेकिन कभी-कभी इसका असर जुलाई तक देखने को मिलता है।
- लैंसेट मेडिकल जनरल के अनुसार 2012 की तुलना में अब भारत में 40 लाख से अधिक लू लगने के मामले हैं।

हीट स्ट्रोक के लक्षण -

- तेज बुखार, जिससे तापमान 104 डिग्री फेरन हाइट या इससे ज्यादा चला जाता है।
- बेहोशी आ जाती है।
- मरीज कोमा में भी जा सकता है।
- थकान, सिर में दर्द, कमजोरी, उल्टी, चक्कर, खूब पसीना आना, गाढ़े-पीले रंग का पेशाब आना (यह शरीर में पानी की कमी की निशानी भी है), कन्फ्यूज होना, मांसपेशियों में ऐठन होना।

क्या करें -

- घर के बाहर निकलने से पहले भरपेट पानी अवश्य पियें।
- सूती, ढीले एवं आरामदायक कपड़े पहनें।
- धूप में निकलते समय अपना सिर ढक कर रखें। टोपी, कपड़ा या छतरी का उपयोग करें।
- पानी, छाछ, ओआरएस का घोल या घर में बनें पेय पदार्थ जैसे लस्सी, नीबू पानी, आम का पना इत्यादि का सेवन करें।
- भरपेट ताजा भोजन करके ही घर से निकलें।

क्या न करें -

- धूप में खाली पेट न निकलें।
- मिर्च मसाले युक्त एवं बासी भोजन न करें।
- कूलर या एयर कंडीशनर से धूप में एकदम बाहर न निकलें।

लू के लक्षण हों तो, ध्यान रखें-

- व्यक्ति को छायादार जगह पर लिटायें।
- व्यक्ति के कपड़े ढीले करें, उसे पेय पदार्थ पिलायें।
- प्रभावित व्यक्ति को तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में ले जाकर चिकित्सीय परामर्श लें।

गांव की लड़कियों के टूटते सपने

मनीषा ठाकुर
जिला - समस्तीपुर
बिहार

आज हम बात करते हैं गांव की उन मजबूर और विवश लड़कियों के बारे में जो गांव के एक मध्यवर्गीय परिवार में जन्म लेती है। जन्म लेते ही अपने ही घरों में लाचार होकर रह जाती है। लड़की जैसे-जैसे बड़ी होती है सपने बुनना शुरू कर देती है लेकिन उसके सारे सपनों को कुचलते हुए उसके पीछे उसके मां-बाप दिखाई देते हैं। 5-6 साल की उम्र में गांव के सरकारी स्कूलों में उसका दाखिला होता है फिर वो स्कूल जाना शुरू कर देती है और कुछ नयी दोस्त बनाती है फिर उसके साथ घुल-मिलकर खुश रहती है, वहीं उसके भाई का दाखिला शहर के किसी अंग्रेजी माध्यम स्कूल में होता है जहां वह अमीरों वाली जिंदगी जीना शुरू कर देता है फिर पहली छुट्टी में वो घर आता है जहां उसके साथ मेहमानों की तरह विचार-व्यवहार, मान, सम्मान किया जाता है। बहन भी अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझकर भाई के आगे पीछे घूमती रहती है, भाई की छुट्टी खत्म होते ही वह शहर की ओर रवाना होता है और इसी के साथ घर में सन्नाटा छा जाता है। भाई जो अपने कपड़े छोड़कर जाता है वो कपड़ा कट -छंटकर बहन के लिए तैयार हो जाता है और वह ड्रेस पहनकर भी बहन बहुत खुश होती है। ये सब करते-करते बहन एक उम्र पार कर जाती है और 13-14 साल की होती है और मैट्रिक पास कर जाती है तब उसे मां-बाप द्वारा जवानी का प्रमाण पत्र दिया जाता है जिसके हिसाब से लड़की को चलना पड़ता है। सलवार सूट, दुपट्टा सहित पहनना उसका धर्म, संस्कार, इज्जत, लज्जा, गहना सब कुछ उसे ही समझाया जाता है और उसे जीने की तहजीब सिखाई जाती है। तुम लड़की हो, ऐसे रहो-वैसे रहो, तुझे दूसरे के घर जाना है इसलिए तुम ऊंची आवाज में बात मत करो, तेज मत हंसो, बहुत कुछ बातें होती है। घर के चूल्हा-चौका से लेकर झाड़ू-पोंछा तथा गोबर से घर-आंगन तक लीपना उस लड़की का कर्तव्य माना जाता है। लड़की फिर भी खुश रहती है किसी तरह वो इंटर तक पढ़ती है या बी.ए. में उसका दाखिला करवाकर उसे घर में बैठाया जाता है तथा उधर उसका रिश्ता देखना शुरू होता है फिर एक दिन उसके लिए लड़का भी मिल जाता है। लड़का मैट्रिक फेल भी होता है तो कोई बात नहीं अगर इंटरमीडिएट हो तो सोने पे सुहागा। उसकी पहली शादी हो चुकी भी हो तो कोई बात नहीं, फिर भी चलता है बस लड़का दिल्ली, पंजाब या बड़े शहरों में मजदूरी करे, कोई बात नहीं सब चलेगा। लड़की की शादी होती है फिर रोकर उस घर से विदा हो जाती है और पति के साथ जिंदगी भर के लिए खुश रहना उसकी मजबूरी बन जाती है क्योंकि लड़की का मायके में अब कुछ हिस्सा नहीं है। शहर की चकाचौंध वाली जिंदगी में मजदूरी करके पति आता है और दोनों की जिंदगी कटने लगती है, वहीं उसका भाई ब्रांडेड मुहर लगाकर

रॉयल जिंदगी जीता है, वहीं लड़की अपने मजदूर पति के साथ अपनी जिंदगी का गुजर बसर करने लगती है। अपनी पुरानी सारी यादों को दफन कर देती है, सारे अरमानों को अपने अंदर दबा देती है और ससुराल जाकर भी यही चीजें झेलने को मिलती है कि तुम दूसरे घर की बेटी हो, लिमिट में रहो, बहु बनकर रहो, आखिर एक लड़की का क्या कसूर होता है जो उसे पूरे जिंदगी झेलना पड़ता है लेकिन मां-बाप आखिर अपने ही बच्चों के साथ इतना भेदभाव क्यों करते है? अगर किसी के पास जवाब हो तो तर्क के साथ पेश आए अन्यथा नहीं। बेटा और बेटी में आखिर धरती और आसमान की तरह फर्क क्यों होता है? एक बेटा को जमीन बेचकर भी उसकी हर शानो शौकत पूरी होती है वहीं बेटी को कपड़े, खाना, पढ़ाई, लिखाई से लेकर यहां तक कि ढंग के लड़कों से शादी भी नहीं करते हैं। चलो मान लिया कि तुम गरीब हो,परिस्थिति सही नहीं है तो बेटा के लिए तो भी गरीब होना चाहिए न, उसे सिर आंखों पर बैठाकर रखे हो और बेटी को कपड़े में पट्टी जोड़कर पहनाते हो ये कैसी परिस्थिति है तुम्हारी? हमारा समाज आखिर कब तक बेटियों पर जुल्म ढहाता रहेगा? बेटी को इतना कोई कैसे गिरा देगा जबकि बेटी भी आपके हर सुख दुख में साथ रहती है, अगर बेटियों के साथ इतना ही अन्याय करना है तो बेटों को ही जन्म दें, बेटियों को जन्म देना छोड़ दें। जो लड़कियां गांव से निकल कर बाहर रहती हैं और उसके मां बाप ने उसे हर वो सुविधाएं दे रखीं है जो कि गांव में सिर्फ और सिर्फ बेटों को ही मिलती है तो वो लड़की खुद को दुनिया की सबसे खुशनसीब लड़की समझें और उसका गलत फायदा कभी न उठाएं, क्योंकि वे लड़कियां बहुत धन्य हैं जो ऐसे परिवार में उनका जन्म हुआ। जहां बेटा-बेटी को बराबर का अधिकार मिला। उन्हें बेटी बनाकर नहीं एक बेटा बनाकर पाला गया और सिर और आंखों पर बैठाकर रखा गया, कोई भेदभाव नहीं हुआ। हर एक सपना पूरा हुआ जिसकी वे हकदार थीं।

सोशल मीडिया और हम

सोशल मीडिया मूल रूप से मानव संचार या जानकारी के आदान प्रदान से संबंधित है जिसमें कंप्यूटर, टैबलेट या मोबाइल एक माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। वेबसाइट और ऐप्स हैं जो इसे संभव बनाते हैं। सोशल मीडिया अब संचार का सबसे बड़ा माध्यम बना है और तेजी से लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है।

माधव यादव
एम.ए. (छात्र)
डॉ. हरिसिंह गौर विवि

सोशल मीडिया आपको विचारों, सामग्री, सूचना और समाचार इत्यादि को बहुत तेजी से एक दूसरे से साझा करने में सक्षम बनाता है। पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया के उपयोग में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई है। सोशल मीडिया जहां सकारात्मक भूमिका अदा करता है, वहीं कुछ लोग इसका गलत उपयोग भी करते हैं। बहुत सी जानकारी भ्रामक भी होती है। बच्चों पर इसका बुरा प्रभाव ज्यादा है। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार सोशल मीडिया के फायदे के साथ नुकसान भी हैं। इंटरनेट प्रयोग करने के मामले में चीन के बाद भारत दूसरे स्थान पर है। हमें सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों पर ध्यान देना होगा।

सकारात्मक पक्ष -

सोशल मीडिया समाज के सामाजिक विकास में अपना योगदान देता है। सोशल मीडिया ने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। एक क्लिक से दुनिया के किसी भी कोने से लोगों को जोड़ा जा सकता है। अगर देखा जाये तो पूरी दुनिया को समेट कर आपके पास ला दिया है। कहीं पर कोई घटना हो जाती है उसकी सटीक जानकारी वीडियो, आडियो के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। सोशल मीडिया शिक्षा के लिए एक अच्छा उपकरण है। इसके जरिए सूचनाएं जल्दी से प्राप्त की जा सकती हैं, जिससे उपयोगकर्ता के समय की बचत होती हैं। इसे समाचार के माध्यम के रूप में लिया जा सकता है। यह घर बैठे कई रोजगार के अवसर प्रदान करता है। इससे हम दूर बैठे अपने सगे संबंधियों, मित्रों से आसानी से बात कर सकते हैं। व्यवसायों को बढ़ाने में

ब्रांड बनाना, गुणवत्ता सामग्री, उत्पाद और सेवाएं पहुंचाने में सोशल मीडिया अति सहायक सिद्ध हुआ है। आप अपने उत्पाद को ऑनलाइन बाजार में बेच सकते हैं और एक ब्रांड बना सकते हैं। ग्राहक के लिए खरीद और उत्पाद से पहले ग्राहक समीक्षा और प्रतिक्रिया पढ़ सकते हैं और स्मार्ट विकल्प बना सकते हैं। मनोरंजन के लिए भी विभिन्न प्रकार के चैनल उपलब्ध हैं।

नकारात्मक क्षेत्र -

सोशल मीडिया का बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। सोशल मीडिया का सदुपयोग किया जाए तो संजीवनी है, लेकिन दुरुपयोग से मुश्किलें बढ़ती हैं। बच्चों की बिगड़ती मानसिकता का एक कारण सोशल मीडिया भी है। बच्चों की शिक्षा सुधारने के लिए जहां डिजिटल तरीके से शिक्षा दी गई वहीं बच्चों के पास लगातार मोबाइल रहने से उन्हें इसकी जबर्दस्त लत लग गई है। अब स्थिति यह है कि छोटे बच्चे तो मोबाइल बिना खाना तक नहीं खाते। गेमिंग की लत के चलते कई बच्चे तो चोरियां तक करने लगे हैं। सोशल मीडिया पर आज युवा वर्ग अधिकतर समय बर्बाद कर रहा है वह केवल मनोरंजन से संबंधित वीडियो, अश्लील वीडियो में समय एवं पैसा खर्च कर रहा है। उसके साथ ही आकर्षक प्रस्तुति के साथ कई नशीले, मानसिक रूप से प्रभावित करने वाले विज्ञापनों के प्रभाव में आकर भविष्य खराब कर रहे हैं। सोशल मीडिया बच्चों में गुस्से व तनाव का कारण भी बनता जा रहा है। सोशल मीडिया को अभिव्यक्ति, नवाचार का अहम् हिस्सा माना जाता है लेकिन सोशल मीडिया के जरिये अफवाह फैलाकर सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ने और राजनीतिक स्वार्थों के लिए गलत जानकारियां परोसी जा रही हैं। सोशल

मीडिया के जरिये तथ्यों को गलत रूप से पेश किया जा रहा है।

साइबर बुलिंग – कई बच्चे साइबर बुलिंग के शिकार बने हैं जिसके कारण उन्हें काफी नुकसान हुआ है। हैकिंग व्यक्तिगत डेटा के नुकसान का कारण बनता है जो सुरक्षा समस्याओं का कारण बन सकता है तथा आइडेंटिटी और बैंक विवरण चोरी जैसे अपराध, जो किसी भी व्यक्ति को नुकसान पहुंचा सकते हैं। रिश्ते में धोखाधड़ी, अश्लील एमएमएस सबसे ज्यादा ऑनलाइन धोखाधड़ी का कारण हैं। लोगों को इस तरह के झूठे प्रेम-प्रंसगो में फंसाकर धोखा दिया जाता है।

स्वास्थ्य समस्याएं – सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है। अक्सर लोग इसके अत्यधिक उपयोग के बाद आलसी, आंखों में जलन और खुजली, दृष्टि के नुकसान और तनाव आदि का अनुभव करते हैं।

सामाजिक और पारिवारिक जीवन का नुकसान – सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण लोग परिवार तथा समाज से दूर, फोन जैसे उपकरणों में व्यस्त हो जाते हैं।

अतः सोशल मीडिया ने कई मायनों में जीवन के कई क्षेत्रों में प्रभावपूर्ण बदलाव लाए हैं। मानव जीवन को समाज से जोड़ने के साथ यह अभिव्यक्ति का सशक्त साधन बन उभर रहा है। इसके रचनात्मक उपयोग से दबी प्रतिभाएं बाहर आ रही हैं। इसका उपयोग मानव जीवन को ऊंचाई तक ले जाने की ओर किया जाना चाहिए। सोशल मीडिया से हमारे देश के युवाओं की पूरी जीवन शैली प्रभावित दिखलाई पड़ रही है। जिसमें रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा और बोल चाल सभी समृद्ध रूप से शामिल है। शराब और धूम्रपान उन्हें एक फैशन सा लगने लगा है। नैतिक मूल्यों के हनन में ये कारण मुख्य रूप से हैं। आज देश के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि युवा शक्ति का सदुपयोग कैसे करें। इसका जवाब सोशल मीडिया में ही छुपा हुआ है। हमारे देश का युवा चाहे तो सोशल मीडिया द्वारा अपने आपको एक अच्छा व्यक्ति बना सकते हैं। यहां वे अपनी रचनात्मकता से रूबरू करा सकते हैं। सूचना के आदान-प्रदान, जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ने, भागीदार बनाने और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि नए ढंग से संपर्क करने में अपना हाथ बढ़ा सकता है। सोशल मीडिया के आने से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का स्वरूप बदला है। आज सोशल मीडिया प्रत्येक व्यक्ति की दिनचर्या का अंग बन गया है। अतः सोशल मीडिया के द्वारा विकास से जुड़ी सूचनाओं और कार्यक्रमों की जानकारियां को युवाओं तक पहुंचाया जाना चाहिए, जिससे कि वह अपना विकास बेहतर ढंग से कर सकें।

कपिल मलैया निःस्वार्थ भाव से समाज के उत्थान में तन-मन-धन से सेवा कार्य कर रहे हैं : गुप्ता

आदिनाथ कार्स प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना वर्ष के 21 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्वेच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ

यह शिविर थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों को रक्त उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था

आदिनाथ कार्स प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना के 21 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्वेच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया के मार्गदर्शन में ब्लड डोनेशन कंपाउंड ग्राउंड फ्लोर सागर श्री हॉस्पिटल मकरोनिया में आयोजित किया गया। यह शिविर थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों को रक्त उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया।

रक्तदान शिविर की जानकारी देते हुए आदिनाथ कार्स के एच.आर. एवं रक्तदान प्रभारी सविनय गुप्ता ने बताया कि आदिनाथ परिवार के 21 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में स्वेच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें संस्थान के अधिकारियों सहित सहयोगियों ने रक्तदान कर शिविर को सफलतापूर्वक संपन्न करवाया। इस शिविर के आयोजन की जानकारी सोशल मीडिया एवं व्यक्तिगत तौर पर सभी आदिनाथ परिवार के सदस्यों को दी गई। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि विचार समिति अध्यक्ष संस्थापक कपिल मलैया जैसे महान समाज सेवक हमारे बीच हैं जो निःस्वार्थ भाव से समाज के उत्थान में तन-मन-धन से सेवा कार्य कर रहे हैं। हमें खुशी है कि समिति के सहयोग से रक्तदान शिविर में सभी ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। हमारा लक्ष्य है कि हर छह माह में इस तरह के शिविरों का आयोजन कर समाज सेवा कर

सकें। इसके लिए हम सभी पूर्ण रूप से तैयार है। जनरल मैनेजर शिवकुमार ठाकुर ने रक्तदान का महत्व बताते हुए कहा 'रक्तदान-महादान' है दूसरे शब्दों में इसे जीवनदान कहा जा सकता है। अब सभी लोग रक्तदान के महत्व को समझने लगे है और रक्तदान के प्रति जागरूकता देखने को मिल रही है लेकिन अभी कई लोगों के मन में डर है। हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें जागरूक करें। इससे लाखों लोगों के जीवन को बचाया जा सकता है।

नेक्सा हेड प्रशांत सिंघई ने रक्तदान के बारे में बताते हुए कहा कि रक्तदान द्वारा किसी को नवजीवन देकर जो आत्मिक आनंद मिलता है उसका न तो कोई मूल्य आंका जा सकता है न ही उसे शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है। भारत में दान करने की प्राचीन प्रथा है। अन्न दान, धन दान से भी अधिक महान रक्तदान है क्योंकि यह जीवन दान कहलाता है। आओ हम सभी

आदिनाथ परिवार के रक्तदाताओं को सर्टिफिकेट प्रदत्त किया गया।

रक्तदान- जीवनदान करें। क्यू. सी. एम. स्मृति ठाकुर ने कहा रक्तदान करके हमें बहुत ही अच्छा लगा। काम में व्यस्त रहने के कारण हमें समाज सेवा का समय नहीं मिल पाता लेकिन इन शिविरों के माध्यम से हमें समाजसेवा का एक अवसर मिलता है।

साथ ही सभी को मदद करनी चाहिए। रक्तदान से जीवनदान मिलता है। साथ ही यह शरीर में संतुलन में सहायक होता है। प्रत्येक व्यक्ति हर तीन माह में रक्तदान कर सकता है। रक्तदान शिविर में प्रवीन, हर्ष यादव, काजल जैन, नरेंद्र यादव, मोहम्मद मकबूल, ललित विश्वकर्मा, ओंकार साहू, मनोहर, प्रशांत, स्वाति ठाकुर, रवि सिंह, मनीषा ठाकुर, अनिकेत केशरवानी, संकल्प मलैया, शिव कुमार ठाकुर, गौरव शुक्ला, आनंद गौतम, विरानिका ने रक्तदान किया। विचार समिति की तरफ से आदिनाथ परिवार के सभी कार्यकर्ताओं का आभार जिन्होंने रक्त दान कर समिति एवं संस्थान को गौरवान्वित किया।

गोबर के दियों से भावी पीढ़ी पश्चिमीकरण के प्रति सचेत होगी : रचना पटेल

सुंदर कलाकृतियों से निर्मित रंग-बिरंगे गोमय दिये।

पर्यावरण, स्वरोजगार, गौ संरक्षण क्षेत्र में समिति गोमय उत्पाद बनाने की मुहिम पर कार्य कर रही है जिसमें मोहल्ला विकास एवं स्व-सहायता समूह की महिलाएं तथा किशोरियां गोमय उत्पाद पर कार्य कर रही हैं। समिति द्वारा प्रशिक्षण एवं सामग्री दी जा रही है। गोबर से बनी सामग्री में दिये, स्मारिका, झूमर, धूपबत्ती यह औषधि मिश्रण से बनी हुई हैं। जिससे उन्हें रोजगार एवं आर्थिक समृद्धि मिल सके। चहुंमुखी लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए समिति कार्य कर रही है। यह दिये बहुत ही अच्छी सजावट के साथ दिए तैयार किए जा रहे हैं। दीये बनाने का कार्य महिलाएं घर बैठे ही कर रही हैं। इन सभी के लिए विचार टीम समय-समय पर सभी मोहल्लों में जाती है। एक महिला एक दिन में लगभग 250 से 300 दिये बना रही हैं। तिलकगंज निवासी रचना पटेल बताती है कि पर्यावरण की दृष्टि से यह दिये बहुत ही अच्छे हैं। यह हमारे संस्कृति के संरक्षण के लिए लाभदायक हैं। दियों के उपयोग से भावी पीढ़ी पश्चिमीकरण के प्रति सचेत होगी। दीयों को बनाने में हमें रोजगार तो मिलता ही है साथ ही शहरी जीवन में यह बहुत अच्छी मुहिम है। उसके साथ ही हम पर्यावरण से मिट्टी के साथ जुड़ते हैं। तुलसीनगर निवासी शकुंतला अहिरवार का कहना है अभी लोग जागरुक नहीं है लेकिन यह भविष्य में बुनियादी रूप एक सशक्त माध्यम बनेगा। दिया बनाने में किसी मशीनीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है। हम लोग एक माह में 10,000 रुपये तक का स्वरोजगार प्राप्त कर चुके हैं।

विचार समिति से जुड़े खुशहाल परिवारों की सफलता की कहानी

जीवन में कोई काम तभी तक कठिन लगता है जब तक उसकी शुरुआत न की जाए। जिस दिन आप अपने मन से उस कार्य को शुरू कर देते हैं फिर वही कार्य सबसे आसान लगने लगता है। विचार समिति वर्ष 2003 से सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के लिए कार्यरत है। विभिन्न सरोकारों से जुड़ी योजनाओं के साथ समिति ने चार वर्ष पूर्व मोहल्ला विकास योजना की शुरुआत की थी, जिसका मुख्य उद्देश्य सागर सुधार–सागर विकास है। जिसके लिए 111 परिवारों को चयनित कर मोहल्ला विकास योजना के अंतर्गत मोहल्ला गठन किया गया। वर्तमान समय में 128 मोहल्ला परिवार समिति द्वारा संचालित है। समिति के मार्गदर्शन में अपने आप को सामाजिक–आर्थिक और बौद्धिक रूप से मजबूत कर रहे हैं। तो आइए प्रस्तुत है सशक्त और आत्मनिर्भर परिवारों में से कुछ प्रेरणादायक कहानियां इन्हीं की जुबानी...

ममता अहिरवार, तुलसी नगर वार्ड

मेरा जन्म सेमरा बाग में हुआ। माता पिता की इतनी अच्छी आर्थिक स्थिति नहीं थी कि पढ़ाई पूरी कर सकूं। शादी तिलक गंज वार्ड में हो गई। पति ठेकेदारी का काम करते हैं। दो बच्चे हैं, दोनों अच्छी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। लड़की आठवीं कक्षा में है और लड़का तीसरी कक्षा की पढ़ाई कर रहा है।

हम सभी के जीवन में कुछ मोड़ आते है जो जीवन की सबसे महत्वपूर्ण सीख देते हैं। कुछ वर्ष पहले मेरे पति का एक्सीडेंट हो गया था, जिसमें पूरे परिवार को कई समस्याओं से गुजरना पड़ा था, क्योंकि घर में कमाने के लिए सिर्फ वही थे। कोई दूसरा आय का स्त्रोत

मोहल्ले में दिये का प्रशिक्षण देतीं हुई समन्वयक ममता अहिरवार

नहीं था उस समय मुझे एक बात तो समझ में आ गई थी। परिवार में महिला हो या पुरुष सभी के पास आय का कोई ना कोई जरिया होना बहुत आवश्यक हैं। उस समय अगर कोई दूसरा चारा होता तो शायद परिवार संभल जाता। न जाने ऐसे कितने परिवार है जो ऐसी समस्याओं से गुजरते हैं। उस समय तो परिवार एवं सहयोगियों की मदद से हालातों में सुधार हुआ। वह एक मेरे लिए

बहुत बड़ी सीख थी जीवन की ।अपने बच्चों को इस लायक जरूर बनाना है ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। कुछ समय पश्चात विचार समिति ने मोहल्ला विकास योजना की शुरुआत की। इस योजना का शुरुआती उद्देश्य परिवारों में स्वच्छता, स्वास्थ्य, आदर्श घर, किचिन गार्डन, परिवारों को जागरूक करते हुए नशा मुक्ति अभियान, युवाओं को सही दिशा की ओर प्रेरित करना आदि है। चयनित समन्वयक के तौर पर अपने को आत्मविश्वास से भरी पूरी पा रही थी। हमारे मोहल्ले के परिवारों में नशे को लेकर जागरूकता आई। महिलाओं ने बढ़-चढ़कर इस योजना में भाग लिया। निश्चित तौर पर जब परिवार के सभी सदस्य सामाजिक सरोकार में आगे आते हैं तो शिक्षा के समान रूप से सभी बच्चों के लिए दरवाजे खुल जाते है। समिति ने रोजगार के क्षेत्र में हथकरघा और गोबर से दीए बनाने की योजना पर काम किया। हमें बहुत खुशी है कि अब हम घर-घर बैठे रोजगार पा रहे है।

हमारे मोहल्ले में 12 महिलाएं गोबर से दीए बनाने का काम कर रही है। मेरे साथ-साथ सभी परिवारों में बदलाव आया है। अब स्थिति ठीक है पति अपना काम करते हैं। मैं अपना घर का काम करने के बाद दिए बनाती हूं। दिन में लगभग 200 से 300 दीए बनाते हैं। इसमें मेरी बेटी की मदद से हम कभी-कभी 400 से 450 दिए बना लेते हैं। मैं समिति की सभी योजनाओं में जुड़ी हूं। आप सभी भी अपने परिवार और मोहल्ले का ध्यान रखें।

सरिता गुरू, संत रविदास वार्ड, भूतेश्वर सागर

सरिता 4 जून 1986 को जन्मी। गांव में पांचवी कक्षा तक की पढ़ाई की। दसवीं की पढ़ाई अपनी बहन के यहां से की। शादी के बाद ससुराल पक्ष के सहयोग से उन्होंने स्नातक तक की पढ़ाई पूरी की। दो बच्चे हैं, अच्छे स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। पति किसानी का कार्य करते हैं। कुशल ग्रहणी है। विचार से जुड़े उन्हें 4 वर्ष हो चुके हैं। वे बताती हैं मेरे ससुर ने समिति से जुड़ने का प्रोत्साहन किया था। मेरी इच्छा थी कि समाज सेवा का कार्य करूं पर कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या और कैसे करना है। हमारे बीच एक और सबसे बड़ी कमी होती है कि कोई कुछ कार्य करने को होता है तो बाकी सभी को लग रहा होता है कि उन्हें कुछ मिल रहा होगा। इन्हीं विचारों ने मुझे भी परेशान किया लेकिन जो समाज सेवा करता

वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि बताते हुए सरिता गुरू।

है वही समझता है हम क्या कर रहे हैं। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि विचार से जुड़ने से पहले घर के अलावा मैं कहीं नहीं जाती थी लेकिन अब लोग हमारे पास समस्या लेकर आते हैं हम भी उनके पास जाते हैं। किसी को कोई समस्या तो नहीं है। सभी मिलकर उस पर चर्चा करते हैं। मुझे बहुत अच्छा लगता है। हम सभी लोग मिलकर पेड़-पौधों, स्वच्छता समसामायिक परिस्थितियों, सामाजिक चेतना की दिशा में प्रयासरत हैं। विचार से मैं सबसे अधिक प्रभावित कोरोना काल में हुई। जब लोग घर से बाहर नहीं निकल रहे थे तब विचार समिति की ओर से दवाइयां, राशन, मेडिकल अस्पताल में हेल्प डेस्क, राहगीरों के लिए अलग से मदद आदि सुविधाएं की गईं। उस समय हमें भी लगा था कि हम किसी के लिए कुछ कर रहे हैं। विचार से हमने बहुत कुछ सीखा और लोगों को बहुत कुछ सिखाया। पर्यावरण के लिए सीडवॉल, मंगलगिरी प्लांटेशन, स्वास्थ्य के लिए नि:शुल्क नेत्र शिविर, दन्त शिविर का आयोजन, स्वास्थ्य परीक्षण। मुख्य रूप से रोजगार के लिए हथकरघा, दिये बनाना, शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के लिए पढ़ाना, सामग्री पहुंचाना जो काफी महत्वपूर्ण रहा। हम सभी के लिए, स्वरोजगार के लिए, अन्य योजनाओं के साथ मुख्यत: मैंने वर्मी कंपोस्ट खाद बनाने का प्रशिक्षण समिति से लिया था। आज हम देख रहे हैं कि हर वस्तु में मिलावटी चीजें मिल रही हैं। विभिन्न रसायनों के छिड़काव से जहरीली हो चुकी है सब्जियां, फल आदि। उपाय केवल यही है कि अधिक से अधिक प्राकृतिक रूप से जो चीजें जैसी है उसी रूप में उपयोग की जाएं। कहने का मतलब यह है कि प्राकृतिक चीजों का इस्तेमाल करें। यह खाद 90 दिन के अंतराल से तैयार हो जाता है। बाद में बिल्कुल शक्कर के दानों जितना बचता है। इसका उपयोग आप फूलों, फलों, सब्जियों, पेड़ों, गमलों के लिए कर सकते हैं। इसका प्रयोग सभी खेती से जुड़े फसलों में किया जा सकता हैं। यह खाद विचार समिति के सहयोग से आप सभी खरीद सकते हैं । यह सामान्य कीमत 6 से 10 रुपये किलो के हिसाब से खरीदा जा सकता है। सकारात्मक बदलाव सभी के सहयोग और समझदारी से ही संभव है।

हम सभी सबसे पहले अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें उसके बाद मूलभूत आवश्यकताओं पर। खुश रहें। जब खुश रहेंगे तो आप अपने स्वयं से ही समाज सेवा की ओर अग्रसर होंगे। हम सभी को समिति की योजनाएं जन-जन तक पहुंचानी है। समिति के लक्ष्यों में मानव कल्याण की भावनाएं स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। समिति के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों पर गौरव महसूस होता है।

प्रभा साहू, भगवानगंज वार्ड, सागर

प्रभा का जन्म 5 जुलाई 1977 को मध्यमवर्गीय परिवार बड़ा बाजार में हुआ । पिता सामान्य व्यसायी थे। छोटी उम्र में शादी हो गई। वे बताती हैं कि 12 वीं की परीक्षा ससुराल से दी। ससुराल पक्ष की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं थी कि मैं शिक्षा पूरी कर सकूं, मैं अपने सारे सपने पूरे कर सकूं। शुरूआत में शिक्षा के क्षेत्र में अपने आप को आगे बढ़ाया। सबसे पहले केशवरानी ज्ञानपीठ से बच्चों को शिक्षित करने के लिए शिक्षा दी। जिससे मुझे आत्मविश्वास मिला साथ ही यह खुशी हुई कि जीवन की राह दुर्गम जरूर है पर राह तो है। इसके पश्चात मैंने कई संस्थानों के साथ बच्चों को शिक्षा दी। विचार से जुड़े आठ वर्ष हो चुके हैं। जब मैं जुड़ी थी तभी से सामाजिक सेवा के क्षेत्र में निरंतर कुछ न कुछ कार्य कर रही और करवाती आ रही हूं। मुझे जीवन को लेकर लगता था कि मैं कुछ नहीं कर पाऊंगी। 12वीं तक की शिक्षा से भला कौन सी नौकरी मिलेगी और आर्थिक रूप से भी कमजोर थी। मैं कैसे, क्या करूंगी? समझ नहीं आता था। मैं अभी सामाजिक सेवा के साथ जॉब कर रही हूं। बच्चों को पढ़ाती हूं मेरे तीन बच्चे हैं। बेटा आईटीआई की पढ़ाई पूर्ण कर चुका है। बेटी एमबीबीएस की डिग्री पूरी कर चुकी है। तीनों बच्चे सक्षम हो जाएं मेरी यही तम्मना है। विचार का सबसे महत्वपूर्ण गुण 'समर्पण' जिसने मुझे काफी प्रभावित किया। इसके साथ

बच्चों को पढ़ाते हुए समन्वयक प्रभा साहू।

ही में विचार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं में मोहल्ला विकास योजना में समन्वयक के रूप में स्वच्छता-स्वास्थ्य पर पर्याप्त ध्यान, बच्चों की शिक्षा हेतु प्रोत्साहन, पर्यावरण के लिए जागरूकता आदि। कई योजनाओं से जुड़कर तथा सभी मोहल्ले के परिवारों में जागरूकता आई। महिलाएं रोजगार को लेकर काफी परेशान होती थी क्योंकि कुछ शिक्षित थीं तो कुछ ज्यादा से ज्यादा 10वीं या 12वीं तक ही पढ़ाई कर पाईं। अधिकतर महिलाएं तो पांचवी से आठवीं तक ही पढ़ पाईं। कुछ तो पढ़ ही नहीं पाई। उनके लिए स्वरोजगार के लिए गोबर से बने दिए काफी रुप से सहयोगी बने। सामाजिक सेवा से जुड़े सभी सदस्यों का समिति ने मान-सम्मान का ध्यान रखा। हमें प्रोत्साहन दिया। मुझे खुशी होती है कि हम सबके सामने स्वयं को प्रस्तुत कर पाएं। अब हमारे परिवार में काफी हद तक सुधार है। अब घरों में बेटियां भी इन दियों को बनाने में मदद करती है। मुझे उम्मीद है कि हमारे समाज में सुधार जरूर आएगा। सभी को समान अवसर के साथ जीवन में उन्नति मिलेगी। मैं इसे एक नए दौर के रूप में ही देखती हूं।

प्रकृति प्रेमियों के लिए विचार समिति ने मंगलगिरी पहाड़ी पर बनाया प्रकृति पथ

प्रकृति प्रेमियों के लिए समिति ने मंगलगिरी पहाड़ी पर प्रकृति पथ बनाया।

प्रकृति प्रेमियों के लिए विचार समिति ने मंगलगिरी पहाड़ी पर प्रकृति पथ बनाया है। प्रकृति पथ बनाने का उद्देश्य बताते हुए समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने कहा कि मंगलगिरी पहाड़ी पर 150 से अधिक किस्मों के सघन पेड़ पौधे हैं। प्रत्येक पेड़ पौधे का अपना वातावरण होता है। इस पथ के माध्यम से सभी लोग प्राकृतिक वातावरण को महसूस कर सकेंगे, समझ सकेंगे कि हम सभी प्रकृति के अभिन्न हिस्से हैं।

श्री मलैया ने पौधों की जानकारी देते हुए बताया कि 7500 पौधे सामान्य तरीके से तथा 1500 पौधे मियावाकी पद्धति से लगवाए गए थे। यह पौधे 15 से 20 फीट ऊंचे हो चुके हैं जिसमें क्रिसमस ट्री, केम, सतपाल, बकौली, सागौन, शीशम, कंजी, मुनगा, आंवला, करोंदा, अशोक, सीताफल, मीठी नीम, कचनार, नीम, खिन्नी, बेल, कैंथा, जामुन, पारिजात, यूकेलिपटस, इमली, सिब्बाबबूल, बांस आदि फूलों में रातरानी, बेला, चमेली, गुलाब, जासुन, सुग्नधरा, मोगरा आदि विभिन्न प्रकार के पौधे लगे हुए हैं। यह क्षेत्र मोर, हिरण एवं कई जंगली जानवरों के साथ पक्षियों की चहचहाहट से भरा रहता है। यह प्रकृति पथ सभी हिस्सों को एक दूसरे से जोड़ता है।

यहां विहार पर आने वाले लोगों को दाना-पानी डालने के लिए भी व्यवस्था बनाई गई है। इन सभी व्यवस्थाओं की हाकम सिंह लोधी एवं चौकीदार विजय के साथ सुरेंद्र यादव, वीरेंद्र पटेल, शुभम राजपूत, कालीचरण चढ़ार देखरेख करते है।

सस्टेनेबल डेवलपमेंट का उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधन उपलब्ध कराना : आकांक्षा मलैया

परिचर्चा में शहर के शिक्षक एवं वर्चुअल माध्यम से विशेषज्ञ उपस्थित हुए।

विचार समिति कार्यालय में सस्टेनेबल डेवलपमेंट (सतत् विकास) पर एक दिवसीय परिचर्चा आयोजित की गई। इस परिचर्चा में सागर शहर से शिक्षक एवं वर्चुअल माध्यम से विशेषज्ञ उपस्थित हुए। सस्टेनेबल डेवलपमेंट की जानकारी देते हुए समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट की परिकल्पना 20वी सदी में की गई, जिसका उदेश्य विकास के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी संसाधन उपलब्ध कराना और सबका जीवन सुखी बनाना है। इस लक्ष्य को पाने के लिए हमें बुनयादी स्तर पर कार्य करने होंगे। वर्चुअल माध्यम से पूर्वी पारीक ने संबोधित किया। भुवनेश सोनी और वंशिका महाना ने भी अपने विचार रखे। पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन स्लाइड के माध्यम से इंटर्न पवन कुमार चव्हाण एवं आशीष ठाकुर ने सस्टेनेबल डेवलपमेंट की आवश्यकता, इसके लिए किये गये प्रयास, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, इसके मार्ग में आने वाली चुनौतियां आदि महत्वपूर्ण विषयों पर आधरित तथ्ययुक्त प्रस्तुति दी। इंटर्न पवन कुमार चव्हाण ने एस.डी.जी.के लक्ष्य गरीबी की समाप्ति, भुखमरी से मुक्ति, लोगों के लिए स्वास्थ्य और आरोग्यता, गुणवत्तापरक शिक्षा, लैंगिक समानता, जल एवं स्वच्छता किफायती और स्वच्छ ऊर्जा, उत्कृष्ट कार्य और आर्थिक विकास, उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचे का विकास,

विचार समिति कार्यालय में सस्टेनेबल डेवलपमेंट (सतत् विकास) पर एक दिवसीय परिचर्चा आयोजित

असमानताओं में कमी, संवहनीय शहरी और सामुदायिक विकास, ज़िम्मेदारी के साथ उपभोग और उत्पाद, जलवायु संरक्षण , जलीय जीवों की सुरक्षा (जल में जीवन) स्थलीय जीवों की सुरक्षा (स्थलीय पारिस्थितिकी में जीवन), शांति, न्याय और सशक्त संस्थाएं, लक्ष्यों के लिए भागीदारी से अवगत करवाया।

परिचर्चा में शामिल हुए चंद्रप्रकाश चौकसे, क्राइस्ट कान्वेंट स्कूल रहली के शिक्षक है। अपना अनुभव साझा करते हुए कहते है कि वे समूह बनाकर, गांवों में जाकर स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करते हैं। वे उन परिवारों के बच्चों को करियर के प्रति विशेष रूप से जागरूक करते है जिनके पिता या अन्यजन नशा खोरी करते हैं ।इस सतत् विकास के लिए जरूरी है शिक्षा के साथ अन्य बिन्दुओं पर जागरूक किया जाये।

एम्मानुएल हायर सेकेंडरी स्कूल से जानकी पटैल, मीना यादव, वी.एस. देवी एवं आर.एस. भदौरिया ने कहा कि हमें पहले मूल समस्या को समझना होगा। विकास की अन्धी दौड़ में कहीं हम भी तो नहीं शामिल हो गए हैं। कई मामलों में हमने देखा जिसमें बच्चे अक्सर घर की स्थिति के अनुसार चलने लगते है। हमें उन्हें इस मानसिक स्थिति से निकलने में मदद करनी होगी। कोरोना काल में यह स्थिति और भी खराब हुई है। आई.पी.एस. स्कूल से श्रीमति नवम राजपूत ने विचार रखते हुए कहा कि शिक्षा सैद्धांतिक रूप से बहुत मजबूत है लेकिन व्यवहारिक रूप में ढल नहीं पाई है। कहने का भावार्थ यह है कि कहा जाता है कि पानी बचाइए लेकिन व्यवहारिक धरातल पर कोई ध्यान नहीं देता। शिक्षक की जिम्मेदारी केवल ज्ञान देना नहीं है अपितु चरित्रनिर्माण भी है। विचार समिति के कार्यक्रम के जरिये नवाचार को जरूर मौका मिलेगा।

सेंट जोसेफ कान्वेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल से प्रियंका पाठक एवं गुलशन सिद्दीकी ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि यह नई पहल है सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण की दृष्टि से बहुत ही अच्छा है। इससे अंतर्मुखी प्रतिभाओं को विकसित होने का अवसर मिलेगा। इन शिक्षकों के अतिरिक्त अन्य गुरुजन भी उपस्थित थे जिनमें रश्मि सुंदरानी, काजल जैन, वी. एस. डेविड शामिल थे जिन्होंने संगोष्ठी में अपने मार्गदर्शक विचार रखे। इस अवसर पर समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत, अनुष्का मलैया, इंटर्न दक्षा शर्मा, सुरभि देबनाथ, विपुल तिवारी, शिवं कुमार तिवारी, राहुल अहिरवार, माधव यादव, विनय चौरसिया, पूजा प्रजापति, भाग्यश्री दीदी, ज्योति दीदी उपस्थित थीं।

लर्निंग इनिशिएटिव फॉर इंडिया एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वावधान में 'लीफी चेंज मेकर्स फेलोशिप' अभियान का शुभारंभ

लर्निंग इनिशिएटिव फॉर इंडिया एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वावधान में 'लीफी चेंज मेकर्स फेलोशिप' अभियान का शुभारंभ किया जा रहा है। इस अभियान की जानकारी देते हुए समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने कहा कि हमारे बीच ऐसे कई बच्चे होते हैं जो स्कूलों में नामांकित तो हैं परन्तु जाते नहीं है या अन्य कारणों से जा नहीं पाते हैं। जिसके कारण स्कूलों में छात्रों की निरंतरता एवं शिक्षा की गुणवत्ता में काफी गिरावट आती है। इस अभियान के तहत बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

अभियान मुख्य अधिकारी गायत्री डे ने वर्चुअल माध्यम से सभी प्रेरकों को संबोधित करते हुए कहा हम उन बच्चों को पढ़ाने जा रहे, जो बच्चे स्कूल में नामांकित तो हैं, लेकिन स्कूल जाना छोड़ दिया है। वे बच्चे जो किसी बुरे अनुभव जैसे -डर, पारिवारिक कारणों से, स्कूल के खराब महौल, आर्थिक कारणों से स्कूल छोड़ चुके हैं। भारत में ऐसे बच्चे लगभग 3 करोड़ हैं। कोविड काल में यह संख्या और भी अधिक बढ़ गई हैं। विभिन्न संस्थानों एवं सरकार को मिलकर इन बच्चों के लिए आगे आना चाहिए।

फेलोशिप प्रक्रिया में कक्षा 1 से 5 तक के बच्चे शामिल होंगे। जिन्हें 2 वर्षों तक शिक्षित किया जाएगा। पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए 3500 प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। सभी उम्मीदवारों के लिए यह अवसर है। अपने मौखिक कौशलों के साथ भाषाई ज्ञान में दक्षता पा सकेंगे। इस अभियान से जुड़ने के लिए शिक्षकों के लिए शैक्षणिक योग्यता स्नातक (किसी भी विषय में) बच्चों को पढ़ाने का अनुभव, बच्चों को पढ़ाने की 2 वर्ष की प्रतिबद्धता एवं अधिकतम आयु 35 वर्ष है। कुशल शिक्षकों के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण दिया जाएगा। लीफी एवं समिति के सहयोग से पाठ्य सामग्री, प्रक्रिया संचालन हेतु मार्गदर्शन समय -समय पर प्रदान किया जाएगा। चेंजमेकर बनने के पश्चात् आपको ऐसे बच्चों की पहचान करनी हैं जो स्कूल नहीं जाते या स्कूली शिक्षा से पूर्णतः वंचित हैं। इसके बाद समिति एवं लीफी द्वारा प्रदान पाठ्यक्रम को लागू कर शैक्षणिक प्रकिया को संपन्न करवाना तथा जिन बच्चों का स्कूलों में दाखिला नहीं है उनका दाखिला करवाना होगा। इतवारी वार्ड से प्रेरक कांति दीदी कई दशकों से बच्चों को शिक्षित कर रहीं हैं। उनका कहना है कि इस अभियान के द्वारा सैकड़ों बच्चों के जीवन में बदलाव आएगा। इस कार्य को सेवा भाव के साथ किया जाये तो यह बहुत ही आनंददायक होगा। प्रेरक प्रभा साहू ने बताया हमारे बीच ऐसे कई बच्चे है जो होटलों में, दुकानों में मजदूरी करते हैं, हम ऐसे बच्चों को प्रेरित करते है। कोविड के समय अंत्योदय शिक्षा अभियान से बच्चे शिक्षा से जुड़े रहे। इस अवसर पर प्रेरको में पूजा मिश्रा, प्रभा साहू, ज्योति जैन, मीना पटेल, कविता यादव, प्रियंका साहू, सविता पटेल, मुस्कान अहिरवार, इच्छा अहिरवार, निशा घोषी, निकिता घोषी, कांति जैन, पूनम मेवाती, विकास सोनी, हिमांशु चौरसिया, प्रियंका पटेल, मधु मौर्य, अमृता मौर्य, निर्जला ठाकुर, वैष्णवी विश्वकर्मा, जया चड़ार के साथ समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत, इंटर्न आशीष ठाकुर आदि उपस्थित थे।

छात्रों के कैरियर की खोज और विकास के लिए समिति ने शुरू की समर इंटर्नशिप

समिति ने समर इंटर्नशिप की शुरुआत की है। इंटर्नशिप के दौरान छात्रों को कैरियर की खोज और विकास के लिए नए कौशल सीखने में सहायता मिलेगी। कार्यस्थल पर नए विचारों, प्रतिभाओं को विकसित करने और संभावित रूप से भविष्य के पथ पर मदद मिलेगी। इन्टर्न रिसर्च, ग्रामीण विकास, महिलाओं का आर्थिक उन्नयन, डॉक्यूमेंटेशन, प्रेजेंटेशन, वीडियोग्राफी, इकोनामी एवं मार्केटिंग आदि विषयों पर कार्य कर रहे हैं। इंटर्न दक्षा शर्मा एवं सुरभि देबनाथ अर्थशास्त्रीय विश्लेषण विषय की पढ़ाई कर रहीं हैं। समिति के माध्यम से गोमय प्रोजेक्ट के सभी तथ्यों का अध्ययन कर रहीं है। इंटर्न पवनकुमार चव्हाण सागर के कामगारों पर शोधपत्र तैयार कर रहे हैं। वे महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर आधारित जानकारी हासिल कर रहे हैं। इंटर्न आशीष ठाकुर का कार्यक्षेत्र ग्रामीण विकास के नये आयामों को खोजना और उस पर शोध करते हुए सागर जिले के विकास से संबंधित कार्य करना है। इंटर्न शिवम कुमार तिवारी काशी हिंदू विश्वविद्यालय में स्नातक अर्थशास्त्र के विद्यार्थी हैं। समिति के कार्यक्रमों की रिपोर्ट तैयार करना, नवाचार के माध्यम से समिति की रणनीतियों को जन-जन तक नए-उपक्रमों से कैसे पहुंचाया जाए इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। इंटर्न विपुल तिवारी वर्तमान में बाजार व्यवस्था एवं वितरण प्रणाली पर कार्य कर रहे हैं जिनके माध्यम से हम महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ कर सकते हैं। उनका विशेष प्रयास गोबर दीपक प्रोजेक्ट से स्त्रियों की आय में वृद्धि करना है। इंटर्न का मार्गदर्शन समिति सचिव आकांक्षा मलैया एवं भुवनेश सोनी द्वारा किया जा रहा।

नियुक्ति : ज्योति सराफ बनीं बधाई प्रकोष्ठ की प्रभारी

विचार समिति की सक्रिय सहायक ज्योति सराफ को कार्यकारिणी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत की अनुसंशा पर बधाई प्रभारी नियुक्त किया गया। ज्योति सराफ विचार समिति में पिछले कई वर्षों से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इस नियुक्ति का उद्देश्य समिति पदाधिकारियों, विशिष्ट जनों, कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों के जन्मदिन, वर्षगांठ उत्सव, विशेष अवसर पर बधाइयां प्रेषित करेंगी। उनकी इस नियुक्ति पर सभी ने शुभकामनाएं दी।

मीडिया कवरेज

सागर शहर के जागरूक युवाओं ने रक्तदान

सागर दिनकर/सागर। आदिनाथ कार्स प्राइवेट लिमिटेड के सफलतापूर्वक 21 वर्ष संपूर्ण होने के उपलक्ष्य में आज 14 मई 2022, दिन शुक्रवार को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कपिल मलैया के मार्गदर्शन से थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चियों के लिए ब्लड डोनेशन किया गया। जिसमें संस्थान के अधिकारीयों सहित सहयोगियों ने अपना ब्लड डोनेट कर शिविर को सफलतापूर्वक संपन्न करवाया। रक्तदान करके देखो अच्छा लगता है। आदिनाथ परिवार उन सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त करता है। जिन्होंने रक्तदान कर संस्थान को गौरवान्वित किया। आप सभी के इस महान तथा सराहनीय कार्य के लिए आप सभी का हृदय से आभार।

शहर के जागरूक युवाओं ने किया रक्तदान

सागर, देशबन्धु। आदिनाथ कार्स प्राइवेट लिमिटेड के सफलतापूर्वक 21 वर्ष संपूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कपिल मलैया के मार्गदर्शन से थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चियों के लिए ब्लड डोनेशन किया गया, जिसमें संस्थान के अधिकारियों सहित सहयोगियों ने अपना ब्लड डोनेट कर शिविर को सफलतापूर्वक संपन्न करवाया। रक्तदान करके देखो अच्छा लगता है। आदिनाथ परिवार उन सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने रक्तदान कर संस्थान को गौरवान्वित किया। आप सभी के इस महान तथा सराहनीय कार्य के लिए आप सभी का हृदय से आभार।

संक्षिप्त समाचार

सागर शहर के जागरूक युवाओं ने रक्तदान किया

सागर, आचरण। आदिनाथ कार्स प्राइवेट लिमिटेड के सफलतापूर्वक 21 वर्ष संपूर्ण होने के उपलक्ष्य में 14 मई 2022, दिन शुक्रवार को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें कपिल मलैया के मार्गदर्शन से थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चियों के लिए ब्लड डोनेशन किया गया, जिसमें संस्थान के अधिकारियों सहित सहयोगियों ने अपना ब्लड डोनेट कर शिविर को सफलतापूर्वक संपन्न करवाया। रक्तदान करके देखो अच्छा लगता है। आदिनाथ परिवार उन सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने रक्तदान कर संस्थान को गौरवान्वित किया। आप सभी के इस महान तथा सराहनीय कार्य के लिए आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

॥ विचार समिति ॥

(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्रा में दान देकर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

दान राशि बैंक खाते में डालने हेतु जानकारी इस प्रकार है।

Bank a/c name- VicharSamiti

Bank- State Bank of India

Account No.- 37941791894

IFSC code- SBIN0000475

Paytm/ Phonepe/ Googlepay/ upi

आदि दान करने के लिए नीचे दिए गए

QR कोड को स्कैन करें.

BHIM UPI

VICHAR SAMITI

Pay With Any App

G Pay Paytm PhonePe WhatsApp amazon

150+ Apps

Powered By BharatPe

- संपर्क -

Website : vicharsanstha.com

Facebook : Vichar Sanstha

Youtube : Vichar Samachar

Ph. No. : 9575737475, 9009780042, 07582-224488

Address : 258/1, Malgodam Road, Tilakganj Ward, Behind Adinath Cars Pvt. Ltd, Sagar (M.P.) 470002